अंगविज्जा (फोल्डर नं. १०६५)

મુખ્ય ટાઈટલ

समर्पण

ग्रन्थानुक्रम

Preface (प्राक्कथन) ---------- vi-viii

प्रस्तावना (मुनिश्री पुण्यविजयजी) ---------- १-१५

विषयानुक्रम ---------- १७-३३

Introduction (Dr. Moti Chandra) ---------- 35-55

अंगविज्जा (हिन्दी भूमिका-श्री सुदेवशरण अग्रवाल) ---------- ५७-८५

हस्तलिखित प्रतियों के फोटोचित्र ---------- ८७-९०

१. अंगविज्जा पइण्णयं-मूलग्रन्थ ---------- १-२६९

१. पहला अंगोत्पत्तो अध्याय ---------- १-३

२. दूसरा निजसंस्तव अध्याय ---------- ३

३. तीसरा शिष्योपख्यापन अध्याय ---------- ३-५

४. चौथा अंगस्तव अध्याय ---------- ५-६

५. पाँचवाँ मणिस्तव अध्याय ---------- ६

६. छट्ठा आधारण अध्याय ---------- ७

७. सातवाँ व्याकरणोपदेश अध्याय ---------- ७

८. आठवाँ भूमीकर्म अध्याय ---------- ८-५६

१. गद्यबंध संग्रहणीटल ---------- ८-९

२. पद्यबंध संग्रहणीपटल ---------- ९-१०

३. भूमीकर्म सत्त्वसमुद्देश ---------- १०-११

४. आत्मभावपरीक्षा पटल ---------- ११-१३

५. निमित्तोपधारणा पटल ---------- १३

६. आसनाध्याय पटल ---------- १३-१८

७. पर्यस्तिका पटल ---------- १८-२१

८. आमासगंडिका पटल ---------- २१-२६

९. अपश्रय पटल ---------- २६-३१

१०. स्थित पटल ---------- ३१-३३

११. प्रेक्षितविभाषा पटल ---------- ३४-३५

१२. हसितविभाषा पटल ---------- ३५-३६

१३. पृष्ट पटल ---------- ३६-३८

१४. वंदितविभाषा पटल ---------- ३८-३९

१५. संलापविधि पटल ---------- ४०-४१

१६. आगतविभाषा पटल ---------- ४१-४२

१७. रुदतविभाषा पटल ---------- ४२-४३

१८. परिदेवितविभाषा पटल ---------- ४३

१९. विक्रंदित पटल ---------- ४४

२०. पतितविभाषा पटल ---------- ४४-४५

२१. आत्मोत्थितविभाषा पटल ---------- ४५-४६

२२. निर्गत पटल ---------- ४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३. प्रचलायितविभाषा पटल ---------- ४६-४७
२४. जृम्भितविभाषा पटल ---------- ४७
२५. जल्पितविभाषा पटल ---------- ४७-४८
२६. चुंबितविभाषा पटल ---------- ४८-४९
२७. आलिंगित पटल ---------- ४५-५१
२८. निपन्नविभाषा पटल ---------- ५१-५३
२९. सेवितविभाषा पटल ---------- ५३-५६
३०. भूमीकर्मसत्त्वगुणविभाषा पटल ---------- ५६
९. नववाँ अंगमणी अध्याय ----------५७-१५९
मणिसूत्र ---------- ५७-५९
१. पिचत्तर पुण्णाम ---------- ५९-६६
२. पिचत्तर स्त्रीनाम ---------- ६६-७२
३. अट्ठावन नपुंसक नाम ---------- ७२-७३
४. सतरह दक्षिण ---------- ७३-७४
५. सतरह वाम ---------- ७५-७६
६. सतरह मध्यम ---------- ७६-७६
७. अट्ठाईस दृढ ---------- ७७-७९
८. अट्ठाइस चल ---------- ७९-८०
९. सोलह अतिवृत्त ---------- ८१-८२
१०. सोलह वर्त्तमान ---------- ८२-८३
११. सोलह अनागन ---------- ८३-८४
१२. पचास अभ्यन्तर ---------- ८४-८६
१३. पचास अभ्यन्तराभ्यन्तर ---------- ८६-८७
१४. पचास बाहिराभ्यन्तर ---------- ८७-८८
१५. पचास अभ्यन्तर बाहिर ---------- ८८
१६. पचास बाहिर ---------- ८९
१७. पचास बाहिर बाहिर ---------- ८९-९०
१८. पचास ओवात-अवदात ---------- ९०-९१
१९. पचास सामोवात-श्यामावदात ---------- ९१
२०. पचास श्याम ---------- ९१-९२
(२१-२२) पचास श्यामकृष्ण और कृष्ण ---------- ९२
(२३-२४) पचास अध्यवदात और अतिकृष्ण ---------- ९२
(२५) बीस उत्तम ---------- ९३
(२६) चौदह मध्यम ---------- ९४
(२७) चौदह मध्यमानन्तर ---------- ९४
(२८) दस जघन्य ---------- ९४-९५
(२९) दो उत्तम मध्यम साधारण ---------- ९५-९६
(३०) दो मध्यम मध्यम साधार ---------- ९६
(३१) दो मध्यमानन्तर मध्यम साधारण ---------- ९६
(३२) दो मध्यमानन्तर जघन्य साधारण ---------- ९६
(३३) दस बालेय ---------- ९७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(३४) चौदह यौवनवस्थ ---------- ९७-९८
(३५) चौदह मध्यमवयस्क---------- ९९
(३६) बीस महावयस्क ----------९९-१००
(३७-३९) वयः साधारण ----------१००
(४०) बीस ब्रह्मेय----------१०१
(४१) चौदह क्षत्रेय ----------१०१
(४२) चौदह वैश्येय ---------- १०१-१०२
(४३) दस शूद्रेय----------१०२
(४४-४६) चतुर्वर्णविधान ---------- १०२-१०४
(४७-५३) आयुःप्रमाणनिर्देश पटल ----------१०४
(५४) बहत्तर शुक्लवर्णप्रतिभोग ----------१०४
(५५-६२) वर्णप्रतिभोगपटल----------१०४
(६३-७३) स्थितामासवर्णयोनिपटल ---------- १०४-१०५
(७४-७९) स्निग्धरूक्ष पटल---------- १०५-१०७
(८०) दस आहार----------१०७
(८१-८५) नीहारपटल---------- १०७-१०८
(८६-९५) दिक्पटल---------- १०८-१११
(९६-९९) प्रसन्नाऽप्रसन्नपटल ---------- १११-११२
(१००-१०३) वामपटल ---------- ११२-११३
(१०४) ग्यारहशिव ----------११३
(१०५) ग्यारह स्थूल---------- ११३-११४
(१०६) नव उपस्थूल अंग----------११४
(१०७) पचीस युक्तोपचय अंग ----------११४
(१०८) पचीस युक्तोपचय अंग ----------११४
(१०९) बीस नातिकृश अंग ----------११४
(११०) सतरह कृश ----------११४
(१११) ग्यारह परंपरकृश----------११४
(११२) छब्बीस दीर्घ ---------- ११४-११५
(११३) छब्बीस युक्तप्रमाण दीर्घ अंग----------११५
(११४) सोलह ह्रस्व किंचिद्दीर्घ अंग ----------११५
(११५) सोलह ह्रस्व----------११५
(११६) दस परिमंडल ---------- ११५-११६
(११७) चौदह करणमंडल----------११६
(११८) बीस वृत्त----------११६
(११९) बारह पृथु ---------- ११६-११७
(१२०) इकतालीस चतुरस्र अंग----------११७
(१२१) दो त्र्यस्र अंग ----------११७
(१२२) पांच कगाय अंग ----------११७
(१२३) सत्ताईस तनु ----------११७
(१२४) इक्कीस परमतनु----------११७
(१२५) दो अणु----------११७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१२६) एक परमाणु अंग----------११७
(१२७) पांच हृदय और समानार्थक ----------११८
(१२८) पांच ग्रहण ----------११८
(१२९) पांच उपग्रहण अंग और एकार्थक----------११८
(१३०) छप्पन रमणीय----------११८
(१३१) बारह आकाश अंग और एकार्थक----------११९
(१३२) छप्पन दहरचल और----------११९
(१३३) छप्पन दहरस्थावर ----------११९
(१३४) दस ईश्वर----------११९
(१३५) दस अनीश्वर ----------११९
(१३६) चौदह ईश्वरभूत अंग----------११९
(१३७) पचास प्रेय ---------- ११९-१२०
(१३८) पचास प्रेष्यभूत---------- ११९-१२०
(१३९) छब्बीस प्रिय और (१४०) छब्बीस द्वेष्य----------१२०
(१४१) छब्बीस मध्यस्थ अंग और समानार्थक---------- १२०-१२१
(१४२-१४६) पृथ्वीकायिकादि अंगोंके नामोंका अतिदेश----------१२१
(१४७) बीस जंगम अंगोंके नाम----------१२१
(१४८) तेत्तीस आतिमूलिक अंगोंके नाम----------१२१
(१४९) तेत्तीस मज्झविगाढ अंगोंके नाम----------१२१
(१५०) तेत्तीस अंत अंगोंके नाम----------१२१
(१५१) पचास मुदित और (१५२) पचास दीन---------- १२१-१२२
(१५३) बीस तीक्ष्ण अङ्ग और समानार्थक----------१२२
(१५४) पिचत्तर उपद्रुत (१५५) पिचत्तर व्यापन्न अङ्ग ----------१२२
(१५६) दो दुर्गन्ध और (१५७) दो सुगन्ध अङ्ग----------१२२
(१५८) नव बुद्धिरमण (१५९) चार अबुद्धिरमण----------१२१
(१६०) ग्यारह महापरिग्रह (१६१) चार अपरिग्रह अङ्ग ----------१२२
(१६२) उन्नीस बद्ध और (१६३) सत्ताईस मोक्ष अङ्ग ----------१२२
(१६४-१६६) पचास स्वक, परकीय और स्वपरकीय अङ्ग----------१२३
(१६७-१७२) दो शब्देय, दो रूपेय, दो गन्धेय, एक रसेय, दो स्पर्शेय, और एक मणेय अङ्ग
और फलादेश----------१२३
(१७३-१७५) चार वातमण, दो सद्दमण और दश वर्णेय अङ्ग ----------१२३
(१७६) दस अग्नेय अङ्ग----------१२३
(१७७) दस जण्णेय अङ्ग ----------१२३
(१७८-१७९) दो दर्शनीय और अदर्शनीय ----------१२३
(१८०) दस थल अङ्ग ----------१२३
(१८१) बारह निम्न अङ्ग ----------१२३
(१८२-१८३) नव गम्भीर और निम्न गम्भीर अङ्ग----------१२४
(१८४-१८९) पन्दरह विषम, चौदह उन्नत, बारह सम, दस उष्ण, दस शीतल, दस आवुणेय अङ्ग१२४
(१९०-१९१) चौरासी पूर्ण और पिचत्तर तुच्छ अङ्ग ----------१२४
(१९२-२३८) उन्नीस विवर, अविवर आदि अङ्ग ----------१२४
(२३९-२७०) पचास एक्ककादि अङ्गोंके नाम ---------- १२६-१२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. दसवाँ आगमन अध्याय---------- १३०-१३५
११. ग्यारहवाँ पृष्ट अध्याय---------- १३५-१३८
१२. बारहवाँ योनि अध्याय---------- १३८-१४०
१३. तेरहवाँ योनिलक्षण व्याकरणाध्याय---------- १४०-१४४
१४. चौदहवाँ लोमद्वाराध्याय---------- १४४-१४५
१५, पनरहवाँ समागमद्वाराध्याय---------- १४५
१६. सोलहवाँ प्रज्दावाराध्याय---------- १४५
१७. सतरहवाँ आरोग्यद्वाराध्याय---------- १४५
१८. अठारहवाँ जोवितद्वाराध्याय---------- १४५-१४६
१९. उन्नीसवाँ कर्मद्वाराध्याय---------- १४६
२०. बीसवाँ वृष्टिद्वाराध्याय---------- १४६
२१. इक्कीसवाँ विजयद्वाराध्याय---------- १४६
२२. बाईसवाँ प्रशस्ताध्याय---------- १४६-१४८
२३. तेईसवाँ अप्रशस्त अध्याय---------- १४८-१४९
२४. चौबीसवाँ जातिविजयाध्याय---------- १४९
२५. पच्चीसवाँ गोत्राध्याय---------- १४९-१५०
२६. छब्बीसवाँ नामाध्याय---------- १५०-१५८
२७. सत्ताईसवाँ स्थान अध्याय---------- १५९
२८. अट्ठाईसवाँ कर्मयोनि अध्याय---------- १५९-१६१
२९. उनतीसवाँ नगरविजयाध्याय---------- १६१-१६२
३०. तीसवाँ आभरणयोनि अध्याय---------- १६२-१६३
३१. इक्तीसवाँ वस्त्रयोनि अध्याय---------- १६३-१६४
३२. बत्तीसवाँ ध्यानयोनि अध्याय---------- १६८-१६५
३३. तेत्तीसवाँ यानयोनि अध्याय---------- १६५-१६६
३४. चौतीसवाँ संलापयोनि अध्याय---------- १६७-१६८
३५. पैंतीसवाँ प्रजाविशुद्धि अध्याय---------- १६८-१७०
३६. छत्तीसवाँ दोहद अध्याय---------- १७०-१७२
३७. सैंतीसवाँ लक्षण अध्याय---------- १७३-१७४
३८. अड़तीसवाँ व्यंजनाध्याय---------- १७४-१७५
३९. उणचालीसवाँ कन्यावासनाध्याय---------- १७६-१७६
४०. चालरीसवाँ भोजनाध्याय---------- १७६-१८२
४१. इकतालीसवाँ वरियगंडिकाध्याय---------- १८२-१८६
४२. बयालीसवाँ स्वप्नाध्याय---------- १८६-१९१
४३. तेंतालीसवाँ प्रवासाध्याय---------- १९१-१९२
४४. चौवालीसवाँ प्रवास अद्धाकालाध्याय---------- १९२-१९३
४५. पैंतालीसवाँ प्रवेश अध्याय---------- १९३-१९४
४६. छियालीसवाँ प्रवेशनाध्याय---------- १९५-१९७
४७. सैंतालीसवाँ यात्राध्याय---------- १९८-१९९
४८. अड़तालीसवाँ जयाध्याय---------- १९९-२०१
४९. उनचासवाँ पराजयाध्याय---------- २०१-२०२
५०. पचासवाँ उपद्रुताध्याय---------- २०२-२०४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५१. इक्कावनवाँ देवताविजयाध्याय ---------- २०४-२०६
५२. बावनवाँ नक्षत्रविजयाध्याय---------- २०६-२०९
५३. त्रेपनवाँ उत्पाताध्याय---------- २१०-२११
५४. चौपनवाँ सारासार अध्याय---------- २११-२१३
५५. पचपनवाँ निधान अध्याय ---------- २१३-२१४
५६. छप्पनवाँ निविसूत्राध्याय---------- २१४-२१६
५७. सत्तावनवाँ नष्टकोशकाध्याय---------- २१६-२२१
५८. अट्ठावनवाँ चिंतिताध्याय ---------- २२३-२३४
५९. उनसठवाँ कालाध्याय---------- २३५-२६२
६०. साठवाँ पूर्वमेवविपाकाध्याय-पूर्वार्ध---------- २६२-२६३
६०. साठवाँ उपपत्तिविजयाध्याय-उत्तरार्ध ---------- २३४-२६९
प्रथम परिशिष्ट-सटीकम् अंगविद्या शास्त्रम्---------- २७२-२८०
द्वितीय परिशिष्ट-अंगविज्जा-शब्दकोष---------- २८१-३२४
तृतीय परिशिष्ट-अंगविज्जान्तर्गतप्राकृतधातुप्रयोगाणं संग्रहः---------- ३२५-३३४
चतुर्थ परिशिष्ट
१. अंगविज्जानवमाध्ययामध्यगतानामङ्गनाम्नां कोष ---------- ३३५-३३७
२. अंगविज्जानवमाध्यायप्रारम्भे निर्दिष्टानां अङ्गविभाजकद्वाराणां संग्रहः---------- ३३८-३४०
३. अंगविज्जानवमाध्याये विभागशो निर्दिष्टानामङ्गनाम्नां यथाविभागं संग्रहः---------- ३४०-३४७
पञ्चमपरिशिष्ट-अंगविज्जामध्यगतानां विशिष्टवस्तुनाम्नां विभागसः संग्रहः ---------- ३४८-३६७
शुद्धिपत्रम् ---------- ३६९-३७२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org